प्रथम अध्याय

‘शशिप्रभा शास्त्री’ का व्यक्तित्व एवं कृतित्व।

अध्याय प्रथम

'शशिप्रभा शास्त्री' का व्यक्तित्व एवं कृतित्व ।

रचनाकार के व्यक्तित्व का अध्ययन रचना के अध्ययन में सहायक सिद्ध होता है अत: रचना का अध्ययन करते समय रचनाकार के व्यक्तित्व को देखना आवश्यक माना जाता है परंतु कई एक विद्वान इसका विरोध करते हैं। उनकी मान्यता है कि रचना और रचनाकार का स्वतंत्र अस्तित्व होता है। दोनों को एक दूसरे के अध्ययन के लिए उपयोगी मानने की आवश्यकता नहीं है। रचना और रचनाकार को एक साथ देखने का आग्रह करनेवाले विद्वान रचना में रचनाकार के व्यक्तित्व को खोजते हैं , तो कई एक विद्वान समकालीन रचनाकारों-विद्वानों के साहित्य के आलोक में विशेष लेखक का व्यक्तित्व खोजते हैं।

आधुनिक हिंदी उपन्यासों के तीन दशकीय इतिहास में डॉ. शशिप्रभा शास्त्री का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। आपके व्यक्तित्व को आपके साहित्य और आपके समकालीन साहित्यकारों के साहित्य के द्वारा प्रकाशित किया जा सकता है। परंतु प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध का विषय 'शशिप्रभा शास्त्री के उपन्यासों में पारिवारिक जीवन' होने के कारण हम उनके व्यक्तित्व के समग्र पहलुओं का अध्ययन न कर केवल संक्षेप में उनके जीवन को प्रकाशित करने का प्रयत्न करेंगे।

उत्तरशती के उपन्यासकारों में शीर्षस्थ स्थान की अधिकारी शशिप्रभा शास्त्री ने साहित्य की अनेक विधाओं को समृद्ध बनाया है। आपके उपन्यासों की विशेषता यह है कि वे जीवन की घटना-प्रसंगो की अनछुई स्थिति को संवेदनात्मक स्तर पर अंकित करते हैं। आपने वास्तव जीवन को चुनकर जीवन की विद्रुपताओं एवं विसंगतियों पर चोट की है। आप पात्रों के आंतरिक परतों के विश्लेषित करती है। यह आपकी विशेषता मानी जाती है। आपने उत्तरशती के नारी-जीवन और पारिवारिक जीवन की समस्त विशेषताओं को कलात्मकता के साथ अंकित किया है। अत: हम प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध में आपके प्रमुख उपन्यासों 'सीढ़ियाँ', 'परछाइयों के पीछे', 'उम्र एक गलियारे की', 'कर्करेखा' में चित्रित पारिवारिक जीवन तक ही हमने अपने को सीमित रखा है। अत: हम अधोलिखित पंक्तियों में शशिप्रभा शास्त्री के व्यक्तित्व कृतित्व के प्रमुख पहलुओं को प्रकाशित करने का प्रयास करेंगे। आपका समग्र जीवन और साहित्य हमारे अध्ययन का विषय नहीं है अत: हम अपनी सीमाओं में ही शशिप्रभा शास्त्री के व्यक्तित्व-कृतित्व को प्रकाशित करेंगे-

व्यक्तित्व-

1) **जन्मस्थान-** "डॉ.शशिप्रभा शास्त्री का जन्म मेरठ एक प्रतिष्ठित कायस्थ परिवार में हुआ है।"[1]

2) **जन्मतिथि-** "शशिप्रभा शास्त्री का जन्म सन 1923 इसवी में हुआ है।"

3) **माता-पिता-** "आपके पिताजी वकील थे और माताजी उदार विचारोंवाली समाज सुधारक सुशील महिला थी।"[2]

4) **शिक्षा-दीक्षा-** "आपकी शिक्षा दिल्ली विश्वविद्यालय तथा जोधपुर विश्व विद्यालय में संपन्न हुई है। आपने दिल्ली विश्वविद्यालय से संस्कृत, तथा हिंदी में एम्. ए. की उपाधि प्राप्त की है। आपने 'हिंदी के पौराणिक नाटकों के मूलस्त्रोत' विषयपर अनुसंधान कर पीएच्.डी. की उपाधि प्राप्त की है।"[3]

5) **सम्प्रति** - डॉ.शशिप्रभा शास्त्री सम्प्रति महादेवी पोस्ट ग्रॅज्युएट कॉलेज के रीडर पद से सेवानिवृत्त हो चुकी है।[4]

लेखन- "आपका लेखन विवाहोपरान्त सन 1956 इसवी से आज तक बराबर शुरू है। आपकी पहली कहानी 'इला' सन् 1956 इ. में 'सरिता' पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। तब से आज तक आपने तीन सौ से अधिक कहानियाँ, तेरह उपन्यास, यात्रा वृत्त, बाल साहित्य का समृद्ध लेखनकर हिंदी साहित्य भण्डार का गौरव बढाया है। आपकी अनेक कहानियाँ भारत की विभिन्न प्रादेशिक भाषाओं और अनेक विदेशी भाषाओं में अनूदित एवं प्रसारित हुई हैं। इन कहानियों में परम्परागत मान्यताओं और रुढियों के विरुद्ध असंतोष और आक्रोश व्यक्त हुआ है। आपकी अधिकांश कहानियों की पृष्ठभूमि पारिवारिक जीवन है।"[5]

अन्य- 'श्रीमती शशिप्रभा शास्त्री एक अच्छी संगीत प्रेमी है। तथा वह एक जिंदादिल इन्सान है। उनका जीवन की तरफ देखने का नजरीया आशावादी रहा है। वह इतना कुछ साहित्य लेखन करते हुए भी घूमने-फिरने की शौकीन रही है। वह विचारों में या उपन्यासों में समानतावाद की पक्षधर रही है। वह एक स्पष्टवादी है तथा नीडर व्यक्तिमत्ववाली इन्सान है। वह एक आत्म प्रचार से रहित लेखन को तप माननेवाली है। वह एक स्त्री स्वतंत्रता की प्रेरक तथा समानता की पक्षधर रही है।

कृतित्व- डॉ. शशिप्रभा शास्त्री का रचना संसार यों है -

1) उपन्यास साहित्य-

1) वीरान रास्ते और झरना, 2) नावें, 3) सीढियाँ, 4) परछाइयों के पीछे, 5) परसों के बाद, 6) क्योंकि, 7) उम्र एक गलियारे की, 8) कर्करेखा, 9) खामोश होते सवाल, 10) ये छोटे महायुद्ध, 11) हर दिन इतिहास, 12) मिनारें, 13) अमलतास

2) कहानी संग्रह-

1) धुली हुई शाम, 2) अनुत्तरित, 3) जोड बाकी, 4) पतझड, 5) दो कहानियाँ के बीच, 6) एक टुकडा शंतिरथ

3) यात्रा साहित्य-

1) सागर पार का संसार, 2) राज की तरह (डायरी)।

4) बाल साहित्य-

1) पुल के पार (उपन्यास), 2) आसमान की मेज (कहानी संकलन), 3) अंधेरे का सिपाही, 4) नीलम देश का जादुगर (उपन्यास), 5) सुनहरा गोभी का फूल (उपन्यास), 6) फूल और सपना (कहानी संग्रह)

5) शोध प्रबंध- श्रीमती शशिप्रभा शास्त्री ने 'हिंदी के पौराणिक नाटकों के मूल स्त्रोत' विषयपर अनुसंधान कर पीएच्.डी. उपाधि प्राप्त की है।

6) पुरस्कार-

1) श्रीमती शशिप्रभा शास्त्री को कोलकत्ता के 'रचना' पुरस्कार से सन् 1984 इसवी में गौरवन्वित किया गया है।

2) 'सीढ़ियाँ' तथा 'परछाइयों के पीछे' उपन्यास को उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान से पुरस्कृत किया गया है।

विशेष- "श्रीमती शशिप्रभा शास्त्रीजी अपनी लेखनी, माँ सरस्वती और लक्ष्मीजी और गणपतिजी की हर दीवाली में बडी तन्मयता और श्रद्धा से पूजा करती है।"

निष्कर्ष- निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते है शशिप्रभा शास्त्री जी साठोत्तरी हिंदी उपन्यासकारों एवं विशिष्ट सर्जकों में महत्त्वपूर्ण स्थान की अधिकारी हैं। उन्होने आज तक जो साहित्य लिखा उसमें उन्होने अपनी एक अलग पहचान स्थापित की हैं। उन्होने साहित्य की अनेक विधा को अपनाकर हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है।

शशिप्रभा शास्त्री का समृद्ध व्यक्तित्व और स्वस्थ लेखन ही उनके सफल जीवन का परिचायक है। अपने जिंदादिली व्यक्तित्व से मनुष्य के यथार्थ जीवन की पीडा और दर्द को वे गहराई से लिखती हैं, इसी कारण उनका लेखन पाठकों के मर्म को छूता है।

शशिप्रभा शास्त्रीजी ने अपने साहित्य में पात्रों की योजना यथार्थ चरित्रों से ही की है। उसमें कल्पना कम और यथार्थता को महत्त्व दिया है। वे कहानी, उपन्यास, बाल साहित्य, यात्रा साहित्य, आदि क्षेत्रों में मौलिक साहित्य सृजन कर रहीं है। उनके साहित्य में हृदय की अपेक्षा मस्तिष्क का चिंतन वर्तमान है। उनके साहित्य में आम आदमी की पीडा, छटपटाहट, कुंठा, असमर्थता, और कृत्रिमता को गहराई के साथ चित्रित किया है। वर्तमान वातावरण की सत्यता, अनुभव का अपनापन और लेखकीय तटस्थता शशिप्रभा शास्त्रीजी की अपनी विशेषता है। विभिन्न मन:स्थितियों को सत्यता के साथ चित्रित कर देने की क्षमता उनमें है। उनके साहित्य में मानवीयता का स्वर दिखाई देता है। इसी कारण उनका साहित्य देश की सीमाओं में बंधा हुआ न होकर सार्वदेशिक है। उनका अधिकांश साहित्य दूसरी भाषा में अनूदित हुआ है।

शशिप्रभा शास्त्रीजी वर्तमान युग की प्रतिभा संपन्न प्रतिष्ठित एवं कुशल साहित्यकार सिध्द हो चुकी है। उन्होंने साहित्य की विभिन्न विधाओं में गहन अनुभूतिक शिल्प कौशल्य का परिचय दिया हैं। उनके व्यक्तित्व को देखकर ऐसा लगता है शशिप्रभाजी संवेदनशील, मिलनसार, गहन अध्येता, संघर्षशील, दृढनिश्चयी, प्रगतिशील, आत्मसम्मानी और स्वाभिमानी व्यक्ति है वे स्पष्टता, ईमानदारी, आत्मसम्मान के कारण हमेशा सफल रही हैं।

संक्षेप में शशिप्रभा शास्त्रीजी के समग्र साहित्य से चित्रित होता है उनको स्पष्ट विचार, रुढि, परंपराएँ और संस्कार उनमें इतना सामर्थ्य है कि वे जीवन में एक नयी ताजगी भरने का सामर्थ्य रखती है। उन्होने भारतीय नारी की पीडा को किसी खोखले आदर्शवाद का जामा नहीं पहनाया है, बल्कि निरंतर समकालीन सच्चाइयों से बेहिचक सामना किया है।

अंत में हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि शशिप्रभा शास्त्री जी शुद्ध मानवतावादी लेखिका हैं। अपनी सूक्ष्म निरीक्षण दृष्टि और गहन अध्ययन से वे मानव मन की गहराई तक पहुँचकर समस्याओं के मूल स्वरूप की सत्यता को उजागर करती हैं। वे एक संवेदनशील यथार्थवादी एवं सात्विक वृत्ति की साहित्यकार हैं।

संदर्भ ग्रंथ - सूची

1) आधुनिक हिंदी कथा लेखिकाएँ डॉ.समकली सराफ, पृच 196

2) महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में बदलते सामाजिक सन्दर्भ- डॉ. शीलप्रभा वर्मा, पृ. 25

3) साठोत्तर महिला कहानीकार- डॉ.मधु सन्धु- पृ. 16

4) साठोत्तर हिंदी उपन्यासों में नारी- डॉ. किरणबाला अरोडा, पृ. 59

5) आधुनिक लेखिकाओं के नगरीय परिवेश के उपन्यास - डॉ.पारूकान्त देसाई, पृ.116-119 से उद्धृत।